Deptt of political science
D.B. College, Jaynagar
B.A. Part-II (H), Paper-IV

DR. A. Kalyanda
Asstt Prof G.P.T.A
Date-06-08-20

Lecture No - 03 And 04

Comparative Government and Politics

राजनीतिक आधुनिकीकरण के प्रतिमान -

राजनीतिक आधुनिकीकरण के प्रतिमानों से तात्पर्य है कि सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक दृष्टि से आधुनिकीकरण का कोई निश्चित क्रम और प्रतिमान होता है। इस सम्बन्ध में दो बातें महत्वपूर्ण है - प्रथम, राजनीतिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया इतनी जटिल है कि उसका कोई - सुनिश्चित प्रतिमान नहीं बन पाता है - द्वितीय - राजनीतिक आधुनिकीकरण का कोई अनुक्रम प्रतिमान भी नहीं हो सकता है इसका कारण उन परिवर्त्यों की अनेकता है जिनसे राजनीतिक आधुनिकीकरण प्रभावित और नियमित होता है। एडवर्ड शिल्स ने अपने लेख 'पोलिटिकल माडर्नाइजेशन' में बताने का प्रयास किया है कि आधुनिकीकरण के आधार पर अगर सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं को देखा जाए तो मोटे तौर पाँच मॉडल उल्लेखनीय लगेंगे। उनके अनुसार सभी राजनीतिक व्यवस्थाएँ राजनीतिक आधुनिकीकरण की निरन्तर रेखा पर कहीं न कहीं अंकित की जा सकती है। ये मॉडल है -

1- राजनीतिक लोकतंत्र
2. अभिभावकी लोकतंत्र
3. आधुनिकीकरणशील वर्गतंत्र
4. सर्वाधिकारी वर्गतंत्र
5. परम्परागत वर्गतंत्र

1- राजनीतिक लोकतंत्र (Political Democracy) —

राजनीतिक लोकतंत्र से एडवर्ड शिल्स का आशय उस व्यवस्था से है जिसकी और आधुनिकतम राज्य उन्मुख है। इसे अपने प्रतिनिधात्मक संस्थाओं और सार्वजनिक संस्थाओं के माध्यम से नागरिक शासन के राज्य के राज्य के रूप में परिभाषित किया है। इस व्यवस्था के मुख्य लक्षण है - सार्वभौमिक मताधिकार द्वारा नियत समय

By - DR. A. K. [illegible]
(Asstt Prof. [illegible]
Pol Sc.)

पर निर्वाचित होने वाली विधायी निकाय, राजनीतिक दलों का अस्तित्व जिसमें चुनाव में बहुमत प्राप्त करने वाले दल की सरकार बने, राजनीतिक सत्ता तुलनात्मक रूप से अल्पकाल के लिए ग्रहण की जाए, सत्ता के निरंकुश और स्वेच्छापूर्ण दुरुपयोग की किसी भी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन न मिले, और स्वतंत्र न्यायपालिका का अस्तित्व हो।

2. अभिभावकी लोकतंत्र - (Tutelary Democracy) —

अभिभावकी लोकतंत्र और राजनीतिक लोकतंत्र में मौलिक अंतर इस बात में निहित है कि अभिभावकी लोकतंत्र में राजनीतिक लोकतंत्र की संरचनात्मक व्यवस्थाएं व्यावहारिक रूप से सक्रिय नहीं रहती हैं अनेक समाजों में कुछ राजनीतिक लोकतंत्र के सिद्धांतों और प्रक्रियाओं में आस्था तो रखते हैं किन्तु उसकी स्थापना की परिस्थितियों के अभाव में लोकतंत्र लाने के लिए प्रयत्नशील ही हो सकते हैं। वास्तव में लोकतांत्रिक व्यवहार की असंभावना के कारण ऐसे लोग लोकतंत्र के रक्षक या अभिभावक बन जाते हैं। ये लोग व्यवस्थापिका और राजनीतिक दलों की शक्ति को सीमित रखकर कार्यपालिका की शक्तियों का केन्द्रण कर लेते हैं। जिससे देश में राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना की परिस्थितियों को पैदा किया जा सके। अभिभावकी लोकतंत्र में राजनीतिक नेताओं की लोकतंत्र में दृढ़ आस्था होती है। इसमें राजनीतिक लोकतंत्र का संरचनात्मक रूप बना रहता है किन्तु व्यवहार में सम्पूर्ण शक्तियां अभिभावक नेताओं में — विद्यमान रहती हैं। जिससे लोकतंत्र की स्थापना के लिए आवश्यक सामाजिक आर्थिक और अभिवृत्यात्मक स्थितियों को बहुत तेजी से विकसित किया जा सके। यह राजनीतिक आधुनिकीकरण की तरफ समस्या को — धकेलने के समान है।

3. आधुनिकीकरणशील वर्गतंत्र - (Modernizing oligarchy)

कई बार लोकतांत्रिक संरचनाओं का विद्यमान रहना अपने आप में राजनीतिक आधुनिकीकरण के मार्ग में बाधा बनने लगता है। आम जनता स्वतंत्रताओं को असीमित और निरपेक्ष मान लेती है। जिससे अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। विकासशील देशों में अक्सर ऐसा देखने को मिला

P.T.O

BP- DR. Abhishek
(Asst Prof Impot)
Date
Page

है, ऐसी परिस्थितियों में आधुनिकीकरणशील गुटतंत्र व्यवस्था में आ जाते है। यह स्वार्थी लोगों के गुट का समूह नही होते है। ऐसी राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक आधुनिकीकरण से अधिक बल आर्थिक और सामाजिक आधुनिकीकरण पर दिया जाता है। वे लोकतांत्रिक शासन तंत्र से परे हटकर एक अधिनायकवादी राज्य की ओर उन्मुख होते है। यदि किसी समाज में सौभाग्य से ऐसे नेता मिल जाए उनकी दृढ़ आस्था समाज को आधुनिक बनाने में है तब तो ऐसा गुटतंत्र समाज में तेजी से आधुनिकता ला पायेगा।

(4) सर्वाधिकारी वर्गतंत्र (Totalitarian oligarchy)

सर्वाधिकारी वर्गतंत्र राजनीतिक आधुनिकता के मुकाबले में आर्थिक व सामाजिक लोकतंत्र को प्राथमिकता देता है। ऐसे लोकतंत्र में एक विचारधारा के आधार पर संगठित एकाधिकारवादी राजनीतिक दल के नेतृत्व में आधुनिकीकरण के सभी पक्षों को एक साथ आगे धकलने का प्रयत्न किया जाता है। इसके कुछ प्रमुख लक्षण है — जो निम्न है —

(I) यह विश्वास छाया रहता है कि प्रशासित समूह को ही श्रेष्ठ जीवन का और उसे प्राप्त करने का साधन का समुचित ज्ञान है। समाज में दूसरे को नही।

(II) सभी सामाजिक मामलों में शासनतंत्र की सर्वोच्चता मानी जाती है। और शासनतंत्र जीवन के सभी क्षेत्रो पर अपना नियंत्रण और प्रभाव रखता है।

(III) सत्तारूढ़ शासकों के अलावा समाज में शक्ति के अन्य विरोधी केन्द्र नही होते।

(IV) विशिष्ट वर्ग के लोग अत्यधिक अनुशासित और एकीकृत निकाय के रूप में होते है।

(V) दल एक अनिवार्य अंग होता है जिसके माध्यम से विशिष्टवर्ग अपना कार्य संचालन करता है। दल अपनी स्वयं की नौकरशाही स्थापित करता है।

(VI) दल शक्ति का एकाधिकार रखता है। अन्य किसी दल के अस्तित्व को स्वीकार नही करता। —

P.T.O

DR. A. K. Yadav
(Asstt Prof)
Pol. Sc

5- परम्परागत वर्गतंत्र – (Traditional oligarchy)

परम्परागत वर्गतंत्र का प्रतिमान

सही अर्थों में राजनीतिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का मुख्य विरोधी है क्योंकि आधुनिकता और परम्परागतता साथ-साथ नहीं चल सकते। इस श्रेणी परम्परागत धार्मिक विश्वासों से सम्बद्ध शक्तिशाली राजवंशीय संविधानों पर आधारित शासन-व्यवस्थाएँ आती हैं। शासक या तो केवल रक्त संबंधों के आधार पर बनते हैं अथवा रक्त संबंधी रिश्तों और चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने के लिए अर्ह द्वारा स्वीकृत ~~चुनाव~~ व्यक्तियों द्वारा चुनाव इन दोनों के संयोग से बनते हैं। शासक अपने सलाहकारों और विश्वासपात्रों को अपनी पसंद के अनुसार अपने संबंधियों मित्रों आदि में से चुनता है। इस प्रकार के परम्परावादी अभिजाततंत्र में किसी विधि निकाय की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि थोड़े बहुत जो भी नये कानून बनाने पड़ते हैं वो शासक और सलाहकारों द्वारा बनाये और लागू किये जाते हैं। परम्परावादी वर्गतंत्र जनता को बहुत कम सेवाएं प्रायः आधारभूत सेवाएं ही प्रदान करता है और लोगों के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में यथासम्भव हस्तक्षेप नहीं करता।

एडवर्ड शिल्स का मानना है कि राजनीतिक आधुनिकीकरण का यह प्रतिमान अर्थात राजनीतिक लोकतंत्र राजनीतिक व्यवस्थाओं की आधुनिकता के स्तर तक पहुँचने का संकेतक है। राजनीतिक आधुनिकीकरण का श्रेष्ठतम रूप राजनीतिक लोकतंत्र का है –

Date- 06-08-20

By – DR. A. K. Yadav
(Asstt Prof. G.D.T.T)
Pol. Sc

Scanned with CamScanner